जैन जी. के.
General Knowledge
भाग - 1
संस्कार का चमत्कार
प्रमाण ज्ञान
डॉ. शुद्धात्मप्रभा टड़ैया

1

प्रार्थना
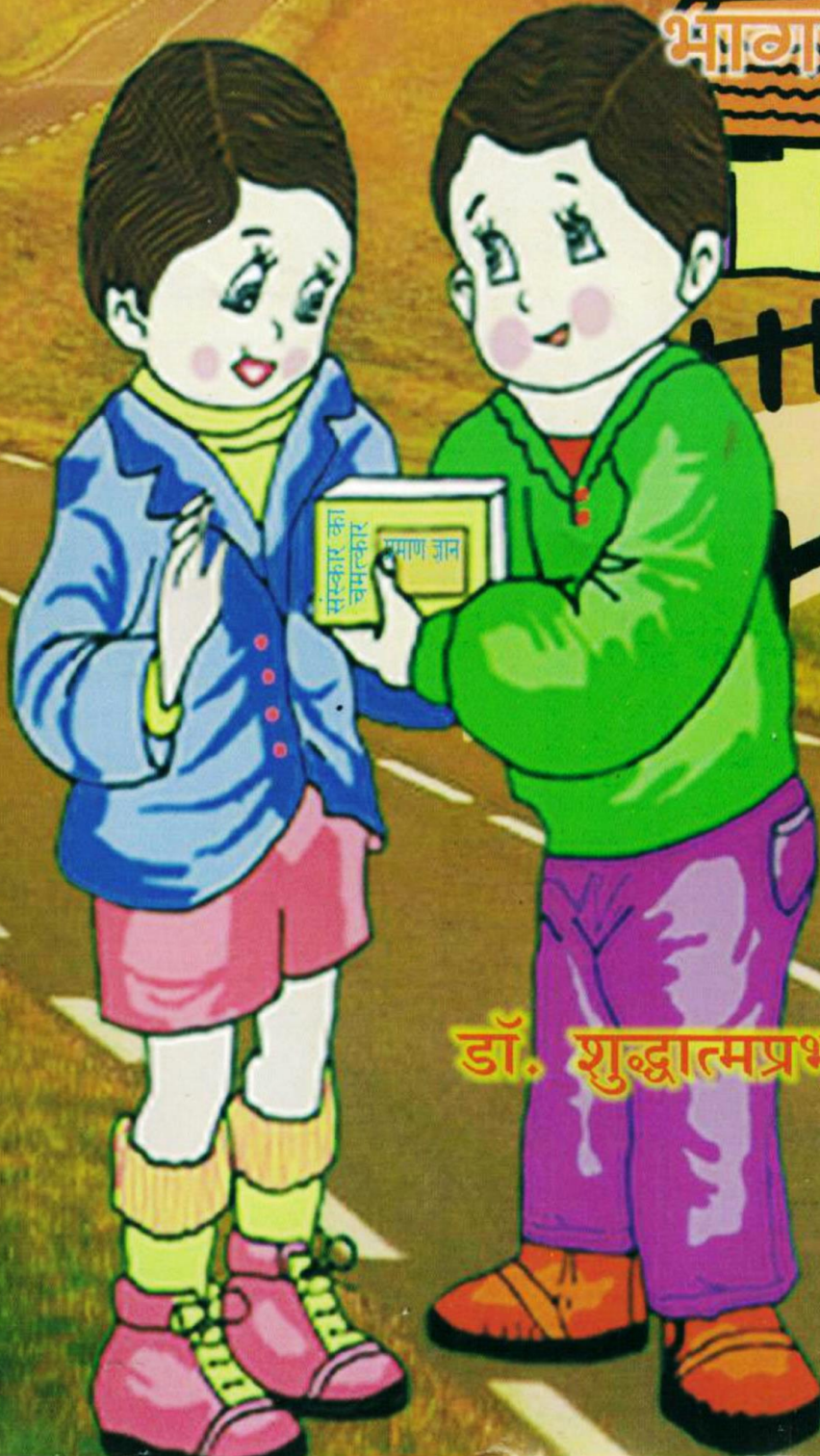
हे भगवान !

आपकी सत्ता से इंकार करता नहीं मै,
आपसे ही अर्ज करता हूँ अपनी बात मैं ।
देख सकता नहीं जिसको मैं,
सत्ता उसकी कैसे मानू मैं?
कहते सभी है आत्मा - आत्मा,
नजर नहीं आती मुझे आत्मा-फात्मा।
देखा नहीं उसे मैने आज तक,
देखना चाहता हूँ आज उसकी झलक।
वह रूखा है या चिकना,
कड़वा है या मीठा ।
ठंडा है या गरम,
कड़ा है या नरम ।
सुना है लोगों से हमने,
जाना है आत्मा आपने।

मिथ्यात्व उड़न छू

वन टू,
मिथ्यात्व उड़न छू ।

थ्री फोर,
संसार नो मोर (No more) ।
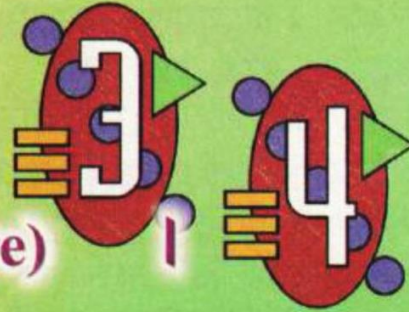
फाईव सिक्स,
मोक्ष नाउ फिक्स (Now fix) ।

सेवन एट,
कर्म आउट ऑफ डेट (Out of date) ।
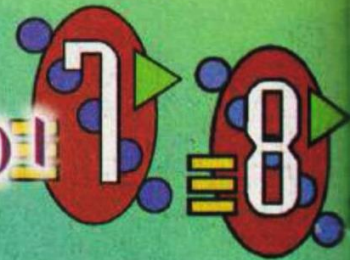
नाइन टेन,
सुख ही सुख देन (Then) ।

स्वभाव - विभाव

ज्ञानमय है आत्मा,
अविनाशी है आत्मा।
आनन्दकन्द है आत्मा,
शुद्धस्वरूपी आत्मा।
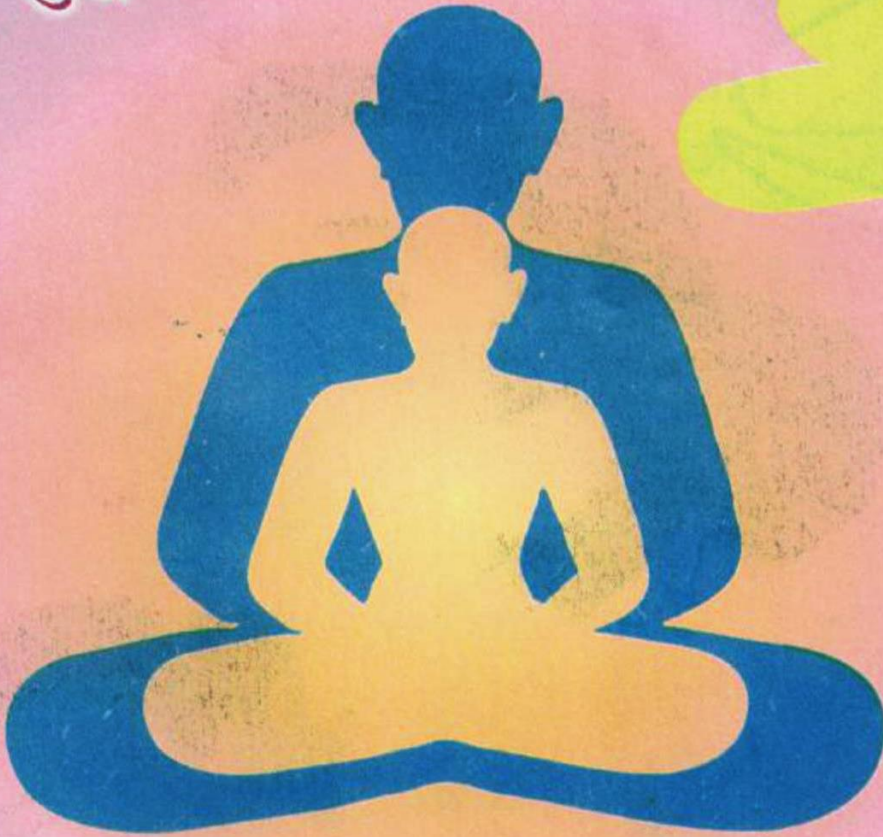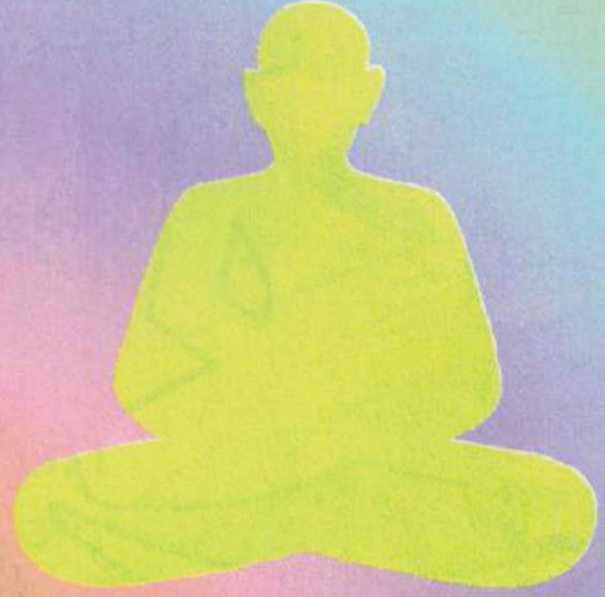
रागादि नहीं आत्मा का स्वभाव,
वे तो हैं आत्मा के विभाव भाव।
पर के लक्ष्य से उत्पन्न होते हैं वे,
आत्मा को सदा दुःख देते हैं वे।

4 जीव
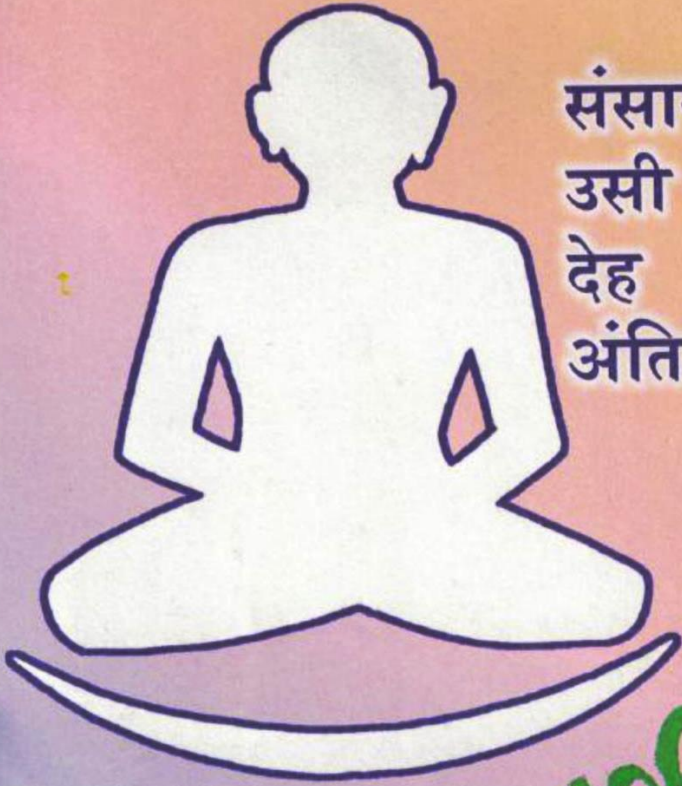
संसार में जिस देह में रहता जीव,
उसी देह के आकार हो जाता जीव।
देह रहित भी जब होता जीव,
अंतिम शरीराकार रहता तब जीव।

सुख-दुःख होते जीव को,
चेतनता होती जीव को।
दिखता नहीं जीव किसी को,
देखता जीव ही है सबको।

5
मूर्त्त - अमूर्त्त
छू सकते हैं पुद्गल को,
चख सकते हैं पुद्गल को।
जुड़ना- बिखरना होता पुद्गल को,
सुख - दुःख नहीं पुद्गल को।
स्पर्श, रस, गंधादि रहित जो द्रव्य,
अमूर्त्त कहलाते हैं वे पांचों द्रव्य।

6
चेतन - अचेतन
गंध होती पुद्गल में,
रूप होता पुद्गल में।
ध्वनि होती पुद्गल में,
चेतना नहीं पुद्गल में।
चेतनता रहित हैं जो पांचों द्रव्य,
अजीव कहलाते वे पांचों द्रव्य।
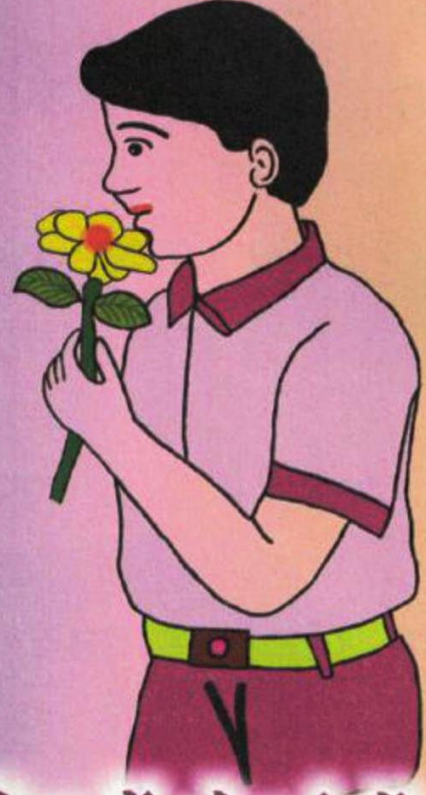
7 सक्रिय - निष्क्रिय
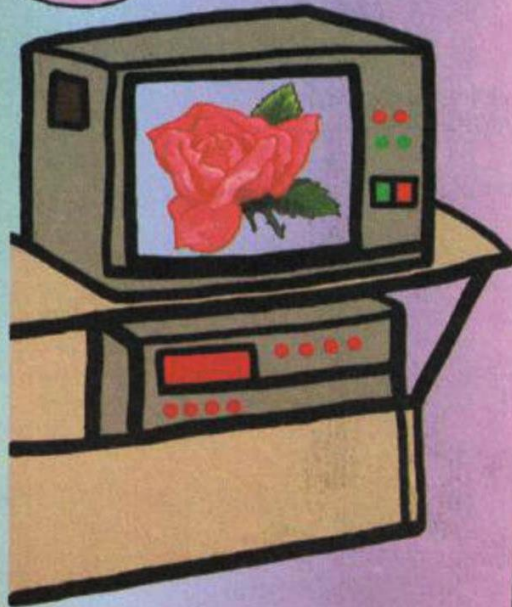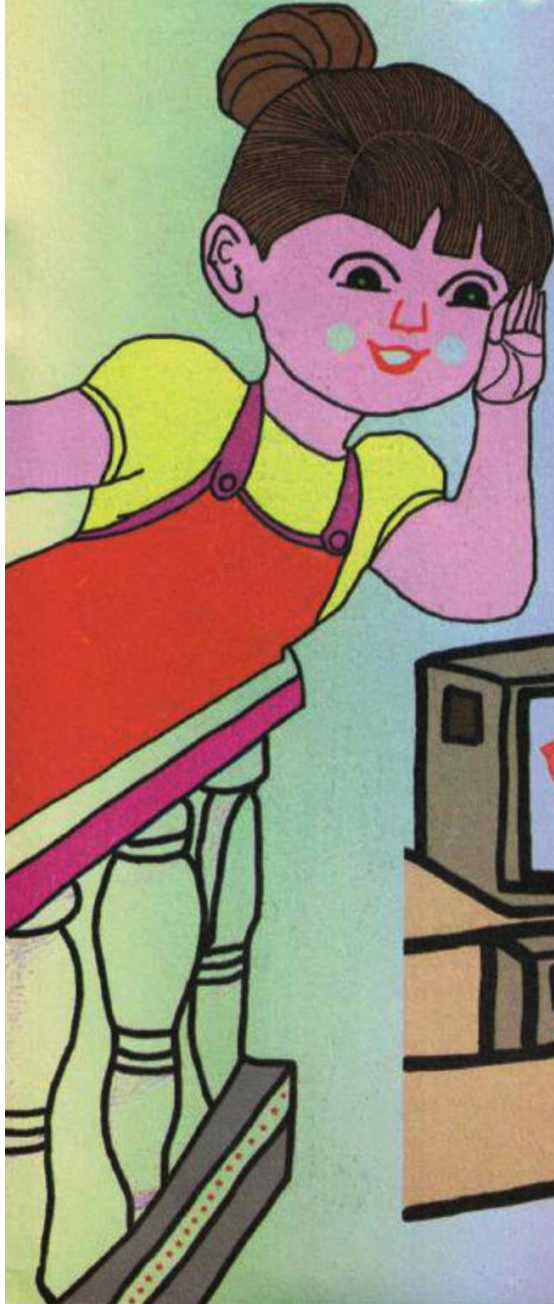
ज्ञान का अंश नहीं मुझमें,
निष्क्रिय धर्मद्रव्य हूँ मैं।
सबके चलने में निमित्त मैं,
गति नहीं स्वयं मुझमें।

8 एक - अनेक
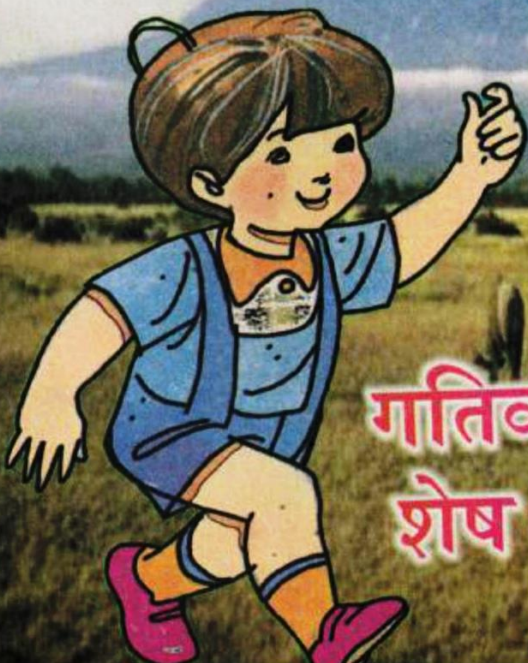
रूपादि रहित मैं,
ठहरने में निमित्त मैं।
अधर्म कर सकता नहीं मैं,
चेतना रहित अधर्मद्रव्य हूँ मैं।
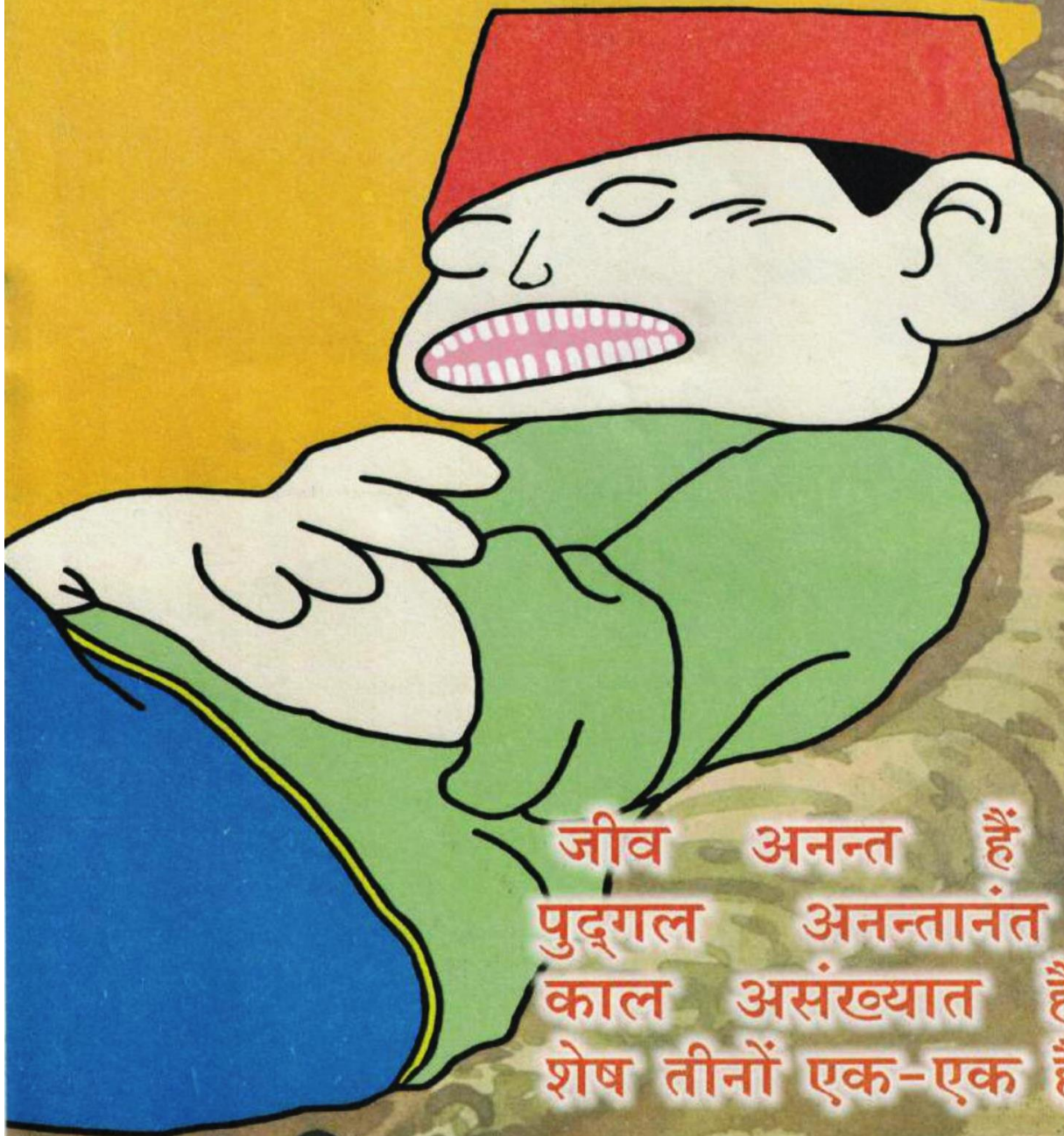
जीव अनन्त हैं होते,
पुद्गल अनन्तानंत होते।
काल असंख्यात हैं होते,
शेष तीनों एक-एक हैं होते।

9 आकाशद्रव्य हूँ मैं

दुनिया में सब जगह हूँ मैं,
मात्र ऊपर - ऊपर नहीं हूँ मैं।
नीला-काला नहीं मैं,
क्योंकि अरूपी हूँ मैं।
द्रव्यों के अवगाहन में निमित्त हूँ मैं,
अचेतन आकाशद्रव्य हूँ मैं।
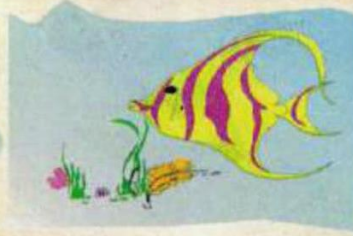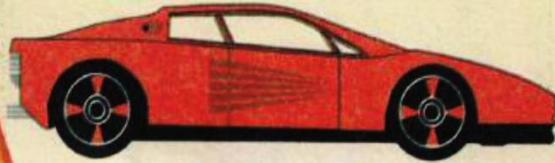
छहों द्रव्य रहते लोकाकाश में,
मात्र आकाश है अलोकाकाश में।
अतः आकाश ही सर्वगत है,
शेष द्रव्य तो असर्वगत हैं।

10 अस्तिकाय - अनस्तिकाय

सब द्रव्यों के परिणमन में निमित्त हूँ मैं,
लोकाकाश के प्रत्येक प्रदेश पर बैठा मैं।
आपस में कभी जुड़ता नहीं मैं,
एक-एक प्रदेशी अतः अस्तिकाय नहीं मैं।
मेरा छोटा अंश समय कहलाता,
मैं कालद्रव्य कहलाता।

एक प्रदेशी होने से काल - अनस्तिकाय कहलाता है,
अनेक प्रदेशी होने से शेष द्रव्य अस्तिकाय कहलाते हैं।
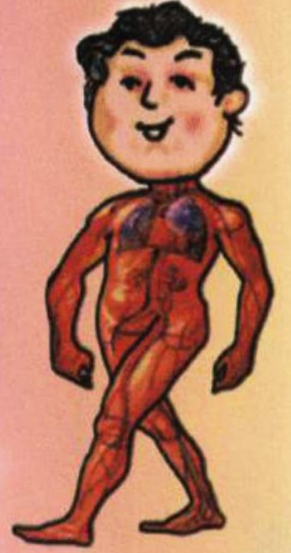
11 द्रव्य हैं हम

नए नहीं उत्पन्न हुए हम,
नष्ट भी नहीं होते हम।
बनाया नहीं किसी ने हमें,
मिटा नहीं सकता कोई हमें।
रूप बदलते प्रतिक्षण हम,
स्वरूप कभी नहीं बदलते हम।
संख्या से अनंतानंत हैं हम,
जाति अपेक्षा छह हैं हम।
साथ - साथ रहते हैं हम,
एकमेक नहीं होते हम।
सदा स्वतंत्र रहते हम,
अनादि - अनंत हैं हम।
बतलाओ कौन हैं हम ?
द्रव्य हैं हम, द्रव्य हैं हम।
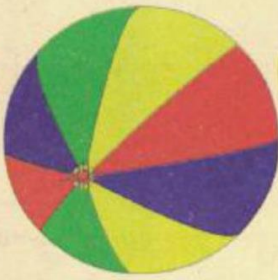
12
क्या है विश्व ?
आकाश
धर्म
अधर्म
काल
इस दुनिया को बनाने वाला कोई नहीं,
अनादि-अनंत विश्व का कर्त्ता कोई नहीं।
विश्व के अतिरिक्त दुनिया कुछ नहीं,
छः द्रव्यों के अलावा विश्व कुछ नहीं।

13 अपना स्वरूप
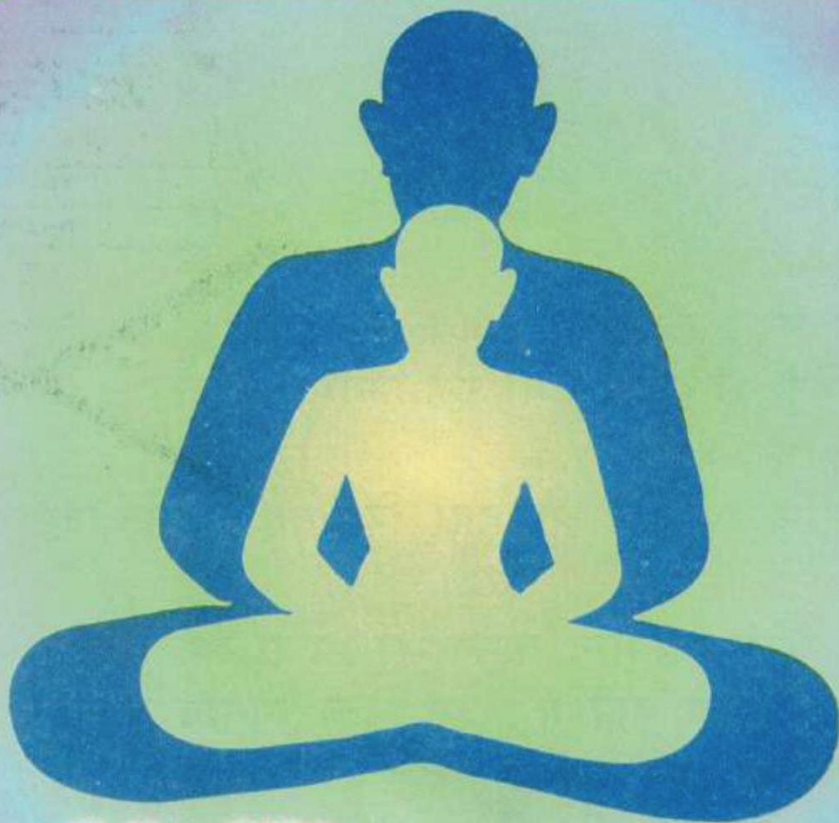
1. आत्मा किसे कहते हैं?
   ज्ञान - दर्शन स्वभावी जीव तत्त्व को।
2. क्या आत्मा इन्द्रियों से जाना जा सकता है?
   नहीं।
3. क्या आत्मा अनुभव में आता है?
   हाँ।
4. क्या आत्मा इन्द्रिय से पकड़ में आनेवाला है?
   नहीं।
5. क्या आत्मा अरस - अरूपी है?
   हाँ।
6. क्या आत्मा को छू सकते हैं?
   नहीं।
7. क्या आत्मा कभी मर सकता है?
   नहीं।

जिनागम से

1. **सबसे अधिक दुःख कहाँ है ?**
   निगोद में ।
2. **निगोद किसे कहते हैं ?**
   एक शरीर के स्वामी जब अनंतजीव बराबरी से होते हैं, तो उन्हें निगोद कहते हैं ।
3. **निगोद के कितने भेद हैं ? नाम बताइए ।**
   दो- नित्य निगोद और इतर निगोद (चतुर्गति निगोद) ।
4. **नित्य निगोद किसे कहते हैं ?**
   जो जीव अनादि काल से आज तक निगोद से कभी निकला ही नहीं है, उसे नित्य निगोद कहते हैं ।
5. **इतर निगोद से क्या तात्पर्य है ?**
   एक बार नित्यनिगोद से निकलकर अन्य कोई भी पर्याय धारण कर पुनः - पुनः निगोद में जाना इतर निगोद है।
6. **अनादि से जीव को किस शरीर का संबंध रहता है ?**
   नित्य निगोद रूप शरीर का ।
7. **निगोदिया जीव की आयु कितनी होती है ?**
   हमारी एक श्वास काल में वे 18 बार जन्मते- मरते हैं ।
8. **नित्य निगोद से कितने समय में कितने जीव निकलते हैं ?**
   6 माह 8 समय में 608 जीव ॥
9. **निगोदिया जीव किस गति के जीव होते हैं ?**
   तिर्यंचगति के ।
10. **निगोदिया जीव की कितनी इन्द्रियाँ होती हैं ?**
    एक मात्र स्पर्शन इन्द्रिय।

15 कहने से क्या होता है ?

गुरुजी : नरक में पड़ेंगे डंडे,
यदि खाओगे कभी अंडे।
संडे हो या मंडे,
कभी न खाओ अंडे।

चंचल : क्यों पड़ेंगे हमें डंडे?
भक्ष्य क्यों नहीं हैं अंडे?

गुरुजी : अंडे से ही जन्म लेता बच्चा,
अतः खाना नहीं उसे अच्छा।

चंचल : पर जब में नहीं खाता अंडे जी,
तब क्यों पड़ेंगेमुझेडंडे जी?

गुरुजी : गाते हो तुम रोज,
कहते हो तुम रोज।
संडे हो या मंडे,
रोज खाओ अंडे।

चंचल : गाने से कुछ नहीं होता जी,
कहने से क्या होता जी ?

गुरुजी : कहने से भी होता है पाप जी,
छोड़ो अब तुम कहना भी।

चंचल : कान पकड़े अब मैंने,
कभी न गाऊँगा ऐसे गाने।

कान पकड़े अब मैंने....

16 आँखें
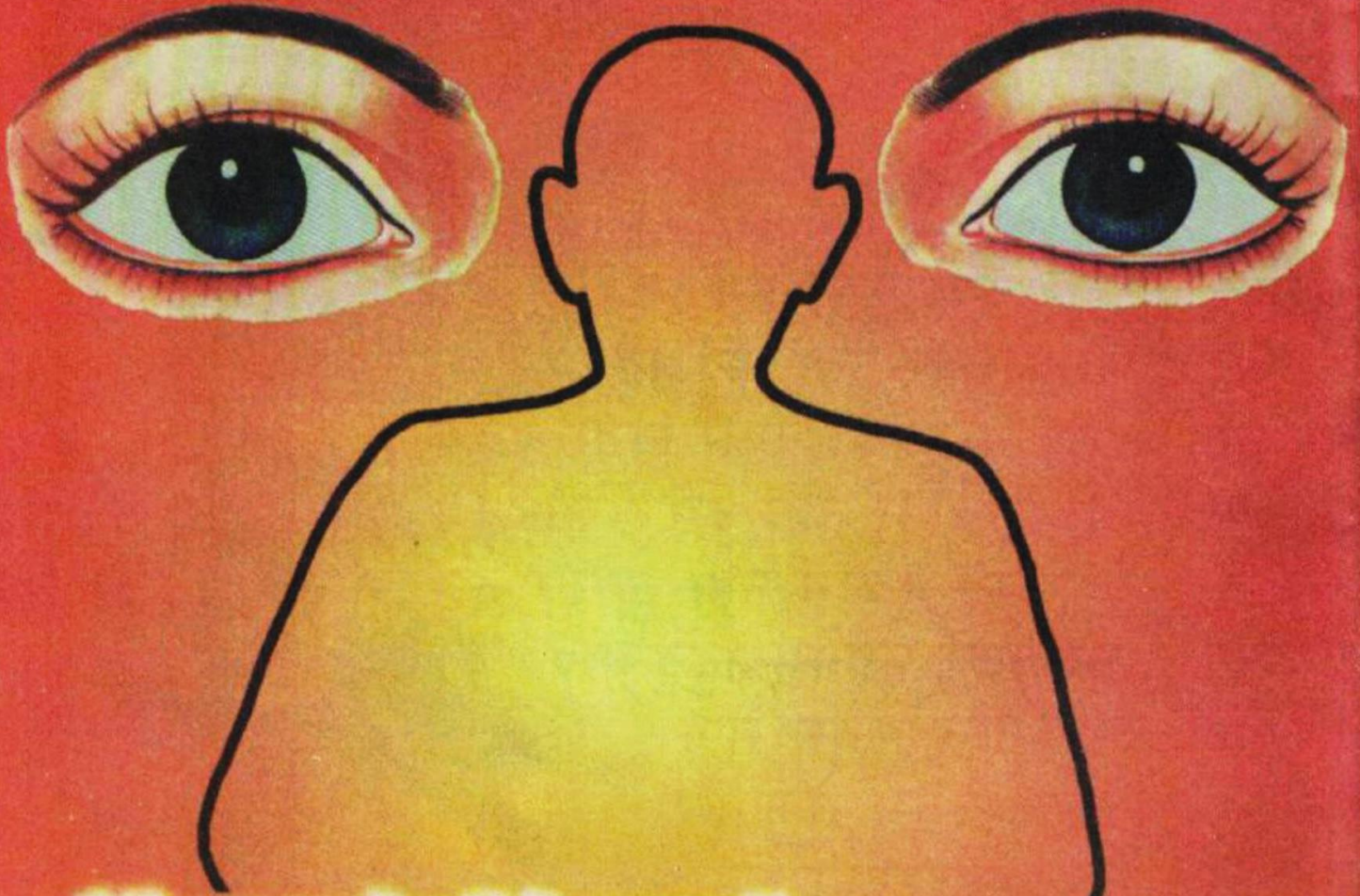
आँखें आत्मा को नहीं देख सकतीं,
आँखें रंग को ही हैं देख सकती।
रंग मात्र पुद्गल में ही होता,
शेष द्रव्यों में रूप - रंग नहीं होता।
अतः नजर नहीं आता आत्मा,
हर जीव के अनुभव में सदा आता आत्मा।
उसका देह में आना जाना ही जीवन-मरण कहलाता है,
अपनी सत्ता का अहसास वह सदा कराता है।

डॉ. शुद्धात्मप्रभा टड़ैया, ललितपुर - झांसी के प्रसिद्ध एडवोकेट श्री अभिनंदन कुमारजी टड़ैया के सुपुत्र श्री अविनाश कुमारजी टड़ैया की धर्मपत्नी है । आपका जन्म अशोकनगर (मध्यप्रदेश) में ३० जनवरी १९५८ को हुआ ।

आपने बी. ए. (ऑनर्स) संस्कृत में स्वर्णपदक प्राप्त किया । एम. ए. मे लघु शोध में व पी. एच. डी. में शोध - प्रबंध में भी आपने जैनाचार्यो एवं इनकी कृतियों को ही अपनी शोध-खोज का विषय बनाया है।

अध्यात्मिक वातावरण एवं धार्मिक संस्कारों में पलीपुसी डॉ. शुद्धात्मप्रभा निरंतर अध्ययनशील रही हैं। सम्प्रति वह अपने परिवार के साथ मुंबई में रहती हैं । जहाँ आपके पति का हीरे - जवाहरात एवं डायमंड ज्वैलरी का व्यवसाय है। मुंबई में आप अवैतनिक रूप से आध्यात्मिक कक्षाओं एवं सामाजिक शिक्षण -प्रशिक्षण शिविरों व धार्मिक कार्यक्रमों का संचालन करती ही हैं ।जैन जागृति एवं धर्म के प्रचार - प्रसार में आपका सराहनीय योगदान हमेशा रहता है ।

धार्मिक एवं साहित्यक अभिरुचि आपकी पैतृक संपदा है । अत: गृहस्थी के जंजाल एवं सामाजिक गतिविधियों से भी कुछ न कुछ समय निकालकर अध्ययन-मनन एवं लेखन से नवीन सृजन में व्यस्त रहती हैं । जैन पुराण के आधार पर लिखी गई राम कहानी एवं युवा वर्ग में धार्मिक संस्कार देने की दृष्टि से पत्र शैली में लिखी विचार के पत्र विकार के नाम और पद्यात्मक संवादों में लिखी मुक्ति की युक्ति एवं जैन दर्शन के सिद्धान्तों को संक्षेप में प्रस्तुत करने वाली जैनदर्शनसार कृति आपकी इसी अभिरुचि का परिणाम है । बाल मनोविज्ञान व बाल मनोभावों को समझते हुए उनके सरल मन को धार्मिक ज्ञान देने के लिए आधुनिक शैली में लिखी गई जैन नर्सरी, जैन के. जी. भाग - १,२,३ बालको को लुभाने में अत्यंत सफल रही हैं ।

लेखिका की अन्य कृतियाँ

कृति	मूल्य
(1) जैन नर्सरी (हिन्दी, गुजरती, मराठी, अंग्रेजी)	10
(2) जैन के. जी. भाग 1 (हिन्दी, गुजरती, मराठी, अंग्रेजी)	17
(3) जैन के. जी. भाग 2 (हिन्दी, गुजरती, मराठी, अंग्रेजी)	17
(4) जैन के. जी. भाग 3 (हिन्दी, गुजरती, मराठी, अंग्रेजी)	17
(5) जैन जी. के. भाग - 1	17
(6) जैन जी. के. भाग - 2	17
(7) जैन जी. के. भाग - 3	20
(8) जैन जी. के. भाग - 4	20
(9) चलो पाठशाला भाग - 1	10
(10) चलो पाठशाला भाग - 2	10
(11) संस्कार का चमत्कार	10
(12) मुक्ति की युक्ति	10
(13) सत्ता का सुख	15
(14) तलाश: सुख की	10
(15) प्रमाणज्ञान	05
(16) जैनदर्शनसार	25
(17) राम कहानी	18
(18) विचार के पत्र : विकार के नाम	06
(19) आ. कुन्द कुन्द और उनके टीकाकार	20
(20) आ. अमृतचंद्र और उनका पुरुषार्थ - सिद्धयुपाय(लघुशोधनिबंध)	20
(21) शब्दों की रेल	20